व्रत, पर्व और त्यौहार

व्रत-पर्व और त्यौहारों का प्रवर्तन हमारे प्राचीन ज्ञान-विज्ञान सम्पन्न, परम विद्वान्, दूरदर्शी, महामना पूर्वजों के द्वारा हुआ था। वे इनके महत्व को, प्रभाव को जानते थे और जो नहीं जानते थे, उन्हें परिचित करवाते थे। महर्षियों ने कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ भी प्रसिद्ध की थी, जिनसे जन-सामान्य को इनके महत्व का ज्ञान होता था।

वास्तव में व्रत से अनेक अंशों में प्राणीमात्र और विशेषकर मनुष्यों का बड़ा भारी उपकार होता है। ग्रामीण देहाती या हमारे बुजुर्ग इस बात को जानते हैं कि अरुचि, अजीर्ण, उदरशूल, कब्ज, सिरदर्द और ज्वर जैसे स्वयं ही ठीक हो जाने वाले रोगो से लेकर कोढ़, उपदंश, जलोदर आदि असाध्य व्याधियाँ भी व्रतों के प्रयोग से निर्मूल हो जाती है और अपूर्व तथा स्थायी आरोग्य प्राप्त होता है। व्रतों के प्रभाव से मनुष्यों की आत्मा शुद्ध होती है। संकल्पशक्ति बढ़ती है। बुद्धि, विचार, चतुराई या ज्ञान तन्तु विकसित होते हैं।

व्रत के फल-महत्व से प्रायः आप सभी परिचित हैं फिर भी यह सूचित करना अनुचित नहीं होगा कि ''मनुष्यों के कल्याण के लिए व्रत स्वर्ग की सीढ़ियाँ अथवा संसार सागर से पार लगा देने वाली प्रत्यक्ष नौकाएँ हैं''।

नवरात्रि आरम्भ, 17 अक्टूबर 2020

यह उत्सव आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर दुर्गाष्टमी तक चलता है, वर्ष भर में चैत्र एवं आश्विन नवरात्री का विशेष महत्व है एवं इस काल में देवी भगवती दुर्गा तथा कन्या पूजन का बड़ा महत्व है। इस अवसर पर भक्तों द्वारा प्रतिपदा के दिन घट-स्थापना तथा जौ बौने की क्रिया सम्पादित की जाती हैं, दुर्गा सप्तशती के पाठ का भी विधान है। कहा जाता है कि इन नवरात्रियों में जो व्यक्ति तन मन से अपने आप को माँ के चरणों में समर्पित करता हैं, उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। नौ दिन के अनन्तर हवन तथा कन्या भोजन कराने की परम्परा है।

नवरात्रि पूजन विधान से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी इसी अंक में प्रकाशित है।

विजयादशमी, 25 अक्टूबर 2020

आश्विन शुक्ल दशमी के दिन मनाया जाने वाला विजयादशमी का त्यौहार वर्षा ऋतु की समाप्ति तथा शरद के आरंभ का सूचक है। इन दिनों दिग्विजय यात्रा तथा व्यापार के पुनः आरंभ की तैयारियां होती है। चौमासे (वर्षा काल) में जो कार्य स्थगित किए गए होते हैं, उनके आरंभ के लिए साधन इसी दिन से जुटाए जाते हैं। यह क्षत्रियों का बहुत बड़ा पर्व है। इस दिन ब्राह्मण सरस्वती-पूजन तथा क्षत्रिय शस्त्र-पूजन करते हैं। इसीलिए विजयादशमी या दशहरा राष्ट्रीय पर्व है। इस पर्व के लिए श्रवण नक्षत्र, प्रदोष व्यापिनी एवं नवमी विजया दशमी प्रशस्त होती है। अपरान्हकाल, श्रवण नक्षत्र तथा दशमी का प्रारंभ विजय यात्रा का मुहूर्त माना गया है।

दुर्गा विसर्जन, अपराजिता पूजन, विजय-प्रयाण, शमी पूजन तथा नवरात्र पारण इस पर्व के महान् कर्म हैं। इस दिन संध्या के समय नीलकंठ पक्षी का दर्शन शुभ माना जाता है। इस दिन प्रातःकाल देवी का विधिवत् पूजन करके नवमी विजया दशमी में विसर्जन तथा नवरात्र का पारण करना चाहिए। अपराह्न वेला में ईशान दिशा में शुद्ध भूमि पर चंदन, कुमकुम आदि से अष्टदल कमल का निर्माण करके संपूर्ण सामग्री जुटाकर अपराजिता देवी के साथ जया तथा विजया देवियों के पूजन का भी विधान है। शमी वृक्ष के पास जाकर विधिपूर्वक शमी देवी का पूजन करके शमी वृक्ष की जड़ की मिट्टी लेकर वाद्य यंत्रों सहित वापस लौटना चाहिए। मिट्टी किसी पवित्र स्थान पर रखनी चाहिए। इस दिन शमी के टूटे हुए पत्तों अथवा डालियों की पूजा नहीं करनी चाहिए।

बंगाल में यह उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। देश के कोने-कोने में इस पर्व में कुछ दिन पूर्व रामलीलाएं शुरू हो जाती है। इस दिन सूर्यास्त होते ही रावण, कुंभकरण तथा मेघनाथ के पुतले जलाए जाते हैं। इस पर्व को भगवती के ''विजया'' नाम के कारण भी ''विजयादशमी'' कहते हैं। साथ ही इस दिन भगवान रामचन्द्रजी चौदह वर्ष का वनवास भोगकर तथा रावण का वध कर लंका पर विजय पाकर अयोध्या लौटे थे, इसलिए भी इस पर्व को विजया दशमी कहा जाता है।

प्रचलित कथा- एक बार पार्वतीजी ने दशहरे के त्यौंहार के फल के बारे में शिवजी से प्रश्न किया। तब शिवजी ने 'विजयकाल' की चर्चा करते हुए बताया, शत्रु पर विजय पाने के लिए राजा को इसी समय प्रस्थान करना चाहिए। इस दिन श्रवण नक्षत्र का योग और भी अधिक शुभ माना गया है महाराज रामचन्द्रजी ने इसी विजयकाल में लंका पर चढ़ाई की थी। शत्रु से युद्ध करने का प्रसंग न होने पर भी इसी काल में राजाओं को सीमा का उल्लंघन करना चाहिए। इसी काल में शमी वृक्ष ने अर्जुन का धनुष धारण किया था तथा रामचन्द्रजी से प्रिय वाणी कही थी। पार्वतीजी ने पूछा, "शमी वृक्ष ने अर्जुन का धनुष कब धारण किया था और रामचन्द्रजी से कैसी प्रिय वाणी कही थी?" शिवजी ने जवाब दिया, "दुर्योधन ने पांडवों को जुए में पराजित करके बारह वर्ष के वनवास के साथ तेरहवें वर्ष में अज्ञातवास की शर्त रखी थी। तेरहवें वर्ष यदि उनका पता लग जाता तो उन्हें पुनः बारह वर्ष का वनवास भोगना पड़ता। इसी अज्ञातवास में अर्जुन ने अपना धनुष एक शमी वृक्ष पर रखा था स्वयं वृहन्लता के वेश में राजा विराट के पास नौकरी कर ली थी। जब गौरक्षा के लिए विराट के पुत्र ने अर्जुन को अपने साथ लिया, तब अर्जुन ने शमी वृक्ष पर से अपने हथियार उठाकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी। विजयादशमी के दिन रामचन्द्रजी द्वारा लंका पर चढ़ाई के लिए प्रस्थान करते समय शमी वृक्ष ने रामचन्द्रजी की विजय का उद्घोष किया था। इसीलिए विजयकाल में शमी पूजन होता है।

एक बार श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को बताया, 'राजन्! विजयादशमी के दिन राजा को स्वयं अलंकृत होकर अपने दासों और हाथी-घोड़ों का श्रृंगार करना चाहिए। वाद्य यंत्रो सहित मंगलाचार करना चाहिए। पुरोहित को साथ लेकर पूर्व दिशा में सीमा का उल्लंघन करना चाहिए। वहां वास्तु, अष्ट दिग्पाल तथा पार्थ देवता के वैदिक मंत्रों का उच्चारण करके पूजा करनी चाहिए। शत्रु की मूर्ति बनाकर उसकी छाती में बाण मारना चाहिए। ब्राह्मणों की पूजा करके हाथी-घोड़ों आदि के अस्त्र-शस्त्रों का निरीक्षण करना चाहिए। तब कहीं अपने महल में लौटना चाहिए। जो राजा प्रतिवर्ष इस प्रकार 'विजया' करता है, उसकी शत्रु पर सदैव विजय होती है।"

अक्टूबर 2020 के मुख्य व्रत, पर्व और त्यौंहार

02 गांधी जयन्ती
08 वायु सेना दिवस
17 शारदीय नवरात्रि प्रारम्भ
23 दुर्गाष्टमी
24 दुर्गा नवमी
25 विजयादशमी
31 शरद पुर्णिमा

शरद पूर्णिमा, 31 अक्टूबर 2020

आश्विन शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा कहते हैं। इसे राम पूर्णिमा भी कहा जाता है। ज्योतिष की मान्यता है कि संपूर्ण वर्ष में केवल इसी दिन चंद्रमा षोड्श कलाओं से (पूर्ण) होता है। इस दिन श्रीकृष्ण को 'कार्तिक स्नान' करते समय स्वयं को पति रूप में प्राप्त करने की कामना से देवी पूजन करने वाली कुमारियों को चीर हरण के अवसर पर दिए वरदान की याद आई थी और उन्होंने मुरलीवादन करके यमुना के तट पर गोपियों के साथ रास रचाया था।

इस दिन प्रातःकाल स्नान करके आराध्य देव को वस्त्राभूषणों से सुशोभित कर आसन, आचमन, वस्त्र, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, सुपारी, दक्षिणा आदि से पूजन करना चाहिए। साथ ही गौदुग्ध से बनी खीर में घी तथा चीनी मिलाकर पूरियों की रसोई सहित अर्द्धरात्रि के समय भगवान को भोग लगाना चाहिए। रात्रि जागरण करके भगवद् भजन करें और चांद की रोशनी में सुई-धागा पिरोएं। पूर्ण चन्द्रमा के आकाश के मध्य में स्थित होने पर उसका पूजन करें तथा रात को खीर से भरी थाली खुली चांदनी में रख दें। दूसरे दिन सबको उसका प्रसाद दें तथा स्वयं भी खाएं। पूर्णिमा का व्रत करके कहानी सुननी चाहिए। कथा सुनते समय एक लोटे में जल तथा गिलास में गेहू, पत्ते के दोने में रोली तथा चावल रखकर कलश की वंदना करके दक्षिणा चढ़ाएं। फिर तिलक करने के बाद गेहूँ के 13 दाने हाथ में लेकर कथा सुने। तत्पश्चात गेहूँ के गिलास पर हाथ फेरकर मिश्राणी के पांव का स्पर्श करके गेहूँ का गिलास उन्हें दे दें। लोटे के जल से रात में चन्द्रमा को अर्घ्य दें। विवाह होने के बाद पूर्णमासी के व्रत का नियम शरद पूर्णिमा से ही शुरू करना चाहिए। कार्तिक का व्रत भी शरद पूर्णिमा से ही आरंभ करना चाहिए।

व्रत कथा- एक साहूकार की दो पुत्रियां थी। दोनो पूर्णमासी का व्रत करती थीं। बड़ी बहन तो पूरा व्रत करती थी, पर छोटी अधूरा। छोटी बहन के जो भी सन्तान होती, वह जन्म लेते ही मर जाती, पर बड़ी बहन की सारी सन्तानें जीवित रहतीं। एक दिन छोटी बहन ने बड़े-पंडितों को बुलाकर अपना दुःख प्रकट किया तथा कारण पूछा। पंडितो ने बताया, "तुम पूर्णिमा का अधूरा व्रत करती हो, इसीलिए तुम्हारी संतानों की अकाल मृत्यु हो जाती है। पूर्णिमा का विधिपूर्वक पूर्ण व्रत करने से तुम्हारी सन्तानें जीवित रहा करेंगी।" तब उसने पण्डितों द्वारा बताए गए विधि-विधान से पूर्णमासी का व्रत किया। कुछ समय बाद उसके लड़का हुआ, लेकिन वह भी शीघ्र ही मर गया। उसने उस लड़के को पीढ़े पर लेटाकर ऊपर से कपड़ा ढक दिया। फिर बड़ी बहन को बुलाया और उसे वही पीढ़ा बैठने को दे दिया। बड़ी बहन के बैठने से ज्यों ही उसका घाघरा बच्चे से छुआ, वह रोने लगा। तब क्रोधित होकर बड़ी बहन ने कहा, "तू मुझ पर कलंक लगाना चाहती थी। यदि मैं बैठ जाती तो लड़का मर जाता।" छोटी बहन बोली, "यह तो पहले ही से मरा हुआ था, तेरे भाग्य से जीवित हुआ है। हम दोनों बहनें पूर्णिमा का व्रत करती हैं। तू पूरा करती है और मैं अधूरा, जिसके दोष से मेरी सन्तानें मर जाती हैं। लेकिन तेरे पुण्य से यह बालक जीवित हुआ है।" इसके बाद उसने पूरे नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि आज से हर पूर्णिमा को व्रत किया जाए, यह संतान-सुख देने वाला है।

◆◆◆